IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

वीरेंद्र कुमार (शोधार्थी) **डॉ. संतोष अरो़रा (प्रोफेसर)**

बी.एड./एम.एड विभाग, एम.जे.पी. रूहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली

सारांश

व्यक्ति की सफलता मुख्य रूप से उसकी बुद्धि, क्षमता और कार्यशैली पर निर्भर करती है। किसी भी क्षेत्र में सफलता अर्जित करने में बुद्धि मुख्य भूमिका निर्वाह करती है। कार्यों और स्वरूप के आधार पर विभिन्न विद्वानों ने बुद्धि के कई प्रकार बताए हैं। हावर्ड गार्डनर द्वारा वर्ष 1983 ई. मे अपनी पुस्तक ***फ्रेम्स ऑफ माइंड*** *में बहु बुद्धि के सिद्धांत का प्रतिपादन किया था जिसमें उन्होंने बहुबुद्धि के सात प्रकार बताए थे, उन सात प्रकारों में शाब्दिक बुद्धि व्यक्ति के जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करती है। प्रस्तुत शोध–पत्र में बी. एड. प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि (Linguistic Intellegence) के स्तर का लिंगभेद, विषय वर्ग और संस्थान प्रबंधन के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श के लिए स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि (Stratied Random Sampling Technique) का प्रयोग किया गया। न्यादर्श के रूप में बरेली शहर के बी. एड. प्रशिक्षण संस्थानों से 150 प्रशिक्षु शिक्षकों का चयन किया गया । प्रस्तुत शोध अध्ययन में 43.33% प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि का स्तर औसत से कम पाया गया और 24% प्रशिक्षु शिक्षकों की बुद्धि औसत स्तर की पाई गई। महिला प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि पुरुष प्रशिक्षु शिक्षकों की तुलना में बेहतर पाई गई और गैर सरकारी संस्थानों से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि का स्तर सरकारी संस्थानों से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षु शिक्षकों की तुलना में निम्न पाया गया।*

मुख्य शब्दः *बहु बुद्धि, शाब्दिक बुद्धि, लिंगभेद और संस्थान प्रबंधन।*

प्रस्तावनाः किसी भी राष्ट्र की उन्नति, उस राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली पर निर्भर करती है और शिक्षा प्रणाली की सफलता मुख्य रूप से राष्ट्र के व्यक्तियों की बुद्धि, क्षमता, सम्प्रेषण कौशल और कार्यशैली पर निर्भर करती है। सामान्यतः देखा गया है कि जो व्यक्ति अधिक बुद्धिमान होता है, वह उतनी ही शीघ्रता से अपना कार्य संपन्न कर लेता है और उसके कार्यों में नवीनता भी होती है। इसलिए विभिन्न विद्वानों ने बुद्धि को उसके कार्यों और स्वरूप के आधार पर परिभाषित भी किया और अनेक सिद्धांतो का प्रतिपादन किया। इसी क्रम में प्रसिद्ध स्विस मनो–चिकित्सक एवं मनोवैज्ञानिक हावर्ड गार्डनर द्वारा वर्ष 1983 ई. मे अपनी पुस्तक

फ्रेम्स ऑफ माइंड में बहु वुद्धि के सिद्धांत का प्रतिपादन किया गया। जिसमें उन्होंने बुद्धि के सात प्रकार बताए, जो शाब्दिक बुद्धि, तार्किक एवं गणितीय बुद्धि, शरीर गतिकी बुद्धि, दृश्यस्थानिक बुद्धि, अंतःव्यैक्तिक बुद्धि, अंतर्व्यैक्तिक बुद्धि, संगीतिक बुद्धि और प्राकृतिक बुद्धि है। शाब्दिक बुद्धि व्यक्ति के जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करती है। शिक्षा के क्षेत्र में शाब्दिक/भाषाई (linguistic Intellegence) का उपयोग सर्वाधिक महत्वपूर्ण है (**आर्मस्ट्रांग, 2009**), क्योंकि इसी के आधार पर विद्यार्थी कें जीवन की आधारशिला का निर्माण होता है। शाब्दिक बुद्धि के महत्व को अहमदियां एवं हुसैनी (2012) तथा उज्ज्वला एवं अन्य (2021) ने अपने शोध शीर्षक, ''द रिलेषनषिप बिटवीन ईरानी इंग्लिष लरनर्स लिंग्विस्टिक इंटेलीजेंस एण्ड देयर राइटिंग एबीलिटी एण्ड राइटिंग असेसमेंट क्राइटेरिया'' में पाया कि स्नातक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन में भाषाई या शाब्दिक बुद्धि की भूमिका महत्वपूर्ण है।

शाब्दिक बुद्धि (Linguistic Intellegence): शाब्दिक बुद्धि किसी व्यक्ति का उसकी भाषा पर स्वामित्व को दर्शाती है। जिस व्यक्ति में शाब्दिक बुद्धि की अधिकता होती है, उसका शब्द भंडार काफी विशाल होता है जिससे उसके व्याख्यान एवं लेखन में शब्दों का चयन बहुत प्रभावशाली होता है। शाब्दिक बुद्धि से आषय व्यक्ति की उस योग्यता एवं क्षमता से है जिसके द्वारा ध्वनियों और शब्दों के अर्थ को समझता है, धारा प्रवाह बोलता है और मौलिक विचारों को लिपिबद्ध करता है तथा व्याकरण संबंधी अशुद्धियों का पता लगाकर दूर कर सकता है। **आर्मस्ट्रांग (2009)** ने ऐसे व्यक्तियों को शब्द चातुर्य (word smart) कहा है। हालिल **(Halil, 2017)** ने शाब्दिक बुद्धि को भाषा संबंधी समझ के प्रदर्शन के रूप में परिभाषित किया है। आर्मस्ट्रांग **(Armstrong, 2009)** ने भाषाई बुद्धि के आकलन के लिए वर्णों की ध्वनि, संचार कौशल, पढ़ना– लिखना, शब्द और शब्द भंडार, व्याकरण और कविता पाठ को आधार माना है। आर्मस्ट्रांग **(Armstrong, 2009)** ने शिक्षकों के बारे में अपने अध्ययन में बताया कि शिक्षकों में शाब्दिक बुद्धि का स्तर उच्च पाया जाता है जिसके आधार पर ही, वे कठिन विषय वस्तु को सरल भाषा में परिवर्तित करके संक्षेप में अपने छात्रों को हस्तांतरित करते हैं। शिवकुमार और अरुणाचलम (2012) ने हाईस्कूल के छात्रों की विज्ञान विषय में उपलब्धि औऱ बहु बुद्धि के मध्य अध्ययन किया जिसमें लड़कों की बहु बुद्धि का स्तर क्रमशः 17% निम्न, 69.6% सामान्य तथा 12.8% उच्च पाया गया जबकि दूसरी तरफ 20% लड़कियों की बहु बुद्धि का स्तर निम्न, 66% सामान्य और 14% लड़कियों में बहुबुद्धि का स्तर उच्च पाया गया। हाईस्कूल के विज्ञान विषय के छात्रों के मध्य लिंग, भाषा का माध्यम, और विद्यालय प्रबंधन के संदर्भ में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया जबकि शहरी और ग्रामीण छात्रों की बहु बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया। टी़. साई (2016) ने जूनियर हाईस्कूल के विद्यार्थियों की बहुबुद्धि का उनकी पृष्ठभूमि से सम्बंधित चरों के सन्दर्भ में अध्ययन किया जिसमे उन्होंने यह पाया कि विद्यार्थियों की शाब्दिक–भाषाई, तार्किक एवं गणितीय,

स्थानिक, संगीतिक, पारस्परिक/अंतर्व्यैक्तिक और अस्तित्ववादी बुद्धि पर लिंगभेद के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया। शाब्दिक–भाषाई, सांगीतिक, पारस्परिक/अंतर्व्यैक्तिक और अस्तित्ववादी बुद्धि पर लड़कों की तुलना लडकियों नें अधिक अंक प्राप्त किये। अलफ़ौरी और समदि (2015) ने अपने अध्ययन के निष्कर्ष में जॉर्डन विश्वविद्यालय में अध्ययनरत छात्रों की भाषाई बुद्धि पर लिंगभेद का सार्थक प्रभाव पाया जिसमें लड़कियों की भाषाई बुद्धि तुलनात्मक रूप से अधिक पाई गयी।

मरियानी **(Mariani, 2016)** ने शिक्षकों की भाषाई विनम्रता का अध्ययन तब किया जब वे कक्षा–कक्ष में अपने विद्यार्थियों के साथ शाब्दिक अंतःक्रिया कर रहे थे, जिसमें इन्होंने यह पाया कि विद्यार्थियों के साथ अंतःक्रिया में विनम्रता सूचक शब्दों का प्रयोग महत्वपूर्ण है, जो उच्च शाब्दिक बुद्धि वाले शिक्षक के द्वारा ही संभव है। इसी तरह के एक अन्य शोध जो विंसी और पुगालेंथी (Vincey &Pugalenthi, 2016) द्वारा किया गया जिसमे उन्होंने कक्षा XI के विद्यार्थियों की लिंगभेद के सन्दर्भ में शाब्दिक बुद्धि और उपलब्धि का अध्ययन किया, जिसमे लड़कों और लड़कियों की शाब्दिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। हाली (Hali,2017) ने अपने अध्ययन में गार्डनर द्वारा प्रतिपादित बहुबुद्धि के सिद्धांत के आधार पर लिटरेसी लर्निंग मॉड्यूल विकसित किया जिसमे पांच मुख्य तत्व 1. परिभाषीकरण 2. विशेषताएं 3. शिक्षण व्यूह रचना 4. अंतिम अधिगम आऊटकम 5. चित्र समाहित है। हसनुदीन और फेट्रियानिग्सी (Hasanudin & Fetrianigsih, 2020) ने शाब्दिक बुद्धि के सात निर्धारक तत्वों का पता लगाया। प्रियंका और छिकरा (Priyanka & Chhikara, 2021) ने शाब्दिक–भाषाई बुद्धि पर शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों, सरकारी और गैर सरकारी (निजी) विद्यालय के छात्रों के मध्य सार्थक अंतर पाया जिसमें शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के छात्रों और गैर सरकारी (निजी) विद्यालय के छात्रों की बुद्धि का स्तर तुलनात्मक रूप से अधिक पाया गया।

प्रमुख षब्दों का परिभाषीकरण:

सरकारी प्रशिक्षण **संस्थानः** सरकारी संस्थान से तात्पर्य सरकार के द्वारा नियंत्रित एवं वित्तपोषित संस्थानों से है।

निजी प्रशिक्षण संस्थानः निजी प्रशिक्षण संस्थान (गैर सरकारी) से तात्पर्य ऐसे संस्थानों से है जिनका नियंत्रण एवं वित्तपोषण निजी प्रबंधतंत्र करता हो।

प्रशिक्षु शिक्षकः प्रशिक्षु शिक्षक से आषय उन विद्यार्थियों से है जो वर्तमान में विभिन्न प्रशिक्षण महाविद्यालयों कें बी.एड. पाठ्यक्रम में अध्ययनरत हैं।

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

शाब्दिक बुद्धिः इस अध्ययन में शाब्दिक/भाषाई बुद्धि से आषय हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले व्याकरण एवं साहित्य के ज्ञान से है। इसमें हिन्दी भाषा एवं साहित्य के संम्पूर्ण ज्ञान से सम्बंधित प्रकरणों को आठ उप भागों में विभाजित किया है।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्वः वर्तमान युग सूचना और संचार क्रांति का युग है। इस युग मे शिक्षकों की सफलता का आधार छात्रों की आत्माभिव्यक्ति की क्षमता है जो शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर पर निर्भर करती है। ऐसे में भावी शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर का ज्ञान करना नितांत आवश्यक है। इस आवश्यकता को ध्यान मे रखकर ही शोधकर्ता द्वारा शोध पत्र हेतु शीर्षक ''**प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन**'' का चयन किया है ।

अध्ययन के उद्देश्यः प्रस्तुत शोध पत्र में निम्नलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है।

1. प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर का अध्ययन करना।
2. प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर का लिंगभेद के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. सरकारी एंव गैर सरकारी प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत् प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएंः

1. पुरुष और महिला प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सीमांकन :

1. प्रस्तुत अध्ययन में बरेली शहर की 20 किमी की परिधि के अंतर्गत आने वाले संस्थानों के बी.एड. प्रशिक्षु शिक्षकों को जनसंख्या के रुप में सम्मिलित किया गया है।
2. बी.एड. प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर का आकलन करने के लिए केवल हिंदी भाषा के लिखित परीक्षण का प्रयोग किया गया है।
3. प्रशिक्षु शिक्षक से आसय उन विद्यार्थियों से है जो महात्मा ज्योतिवा फुले रूहेलखंड **विश्वविद्यालय** बरेली से सम्बध महाविद्यालयों में बी.एड. पाठ्यक्रम में अध्ययनरत हैं।

शोध विधि : प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है,जो वर्णात्मक अनुसंधान का एक प्रकार है। इस अध्ययन में स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्शन विधि (stratified Random Sampling

Technique) का प्रयोग करके सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानो से 150 प्रशिक्षु शिक्षकों का चयन कर लिया गया जो उक्त दिवस मे संस्थान में उपस्थित थे।

उपकरण: अध्ययन हेतु स्वनिर्मित बहुविकल्पीय भाषाई बुद्धि परीक्षण का प्रयोग किया जो आर्मस्ट्रांग के वहु बुद्धि परीक्षण पर आधारित है। प्रयुक्त उपकरण में बुद्धि के स्तर का आकलन करने के लिए 8 आयाम निर्धारित किए गए हैं, जो निम्नलिखित हैं–

क्रम संख्या	आयाम	कुल पद
1	संज्ञा, सर्वनाम, उपसर्ग और प्रत्यय	05
2	विलोम शब्द एवं पर्यायवाची शब्द	04
3	मुहावरे एवं लोकोक्तियां	04
4	रस, छंद और अलंकार	04
5	संधि और समास।	04
6	शब्दों का उचित प्रयोग	04
7	शुद्ध वर्तनी का प्रयोग	08
8	साहित्य संबंधी ज्ञान।	05
कुल पद		38

अंकन : प्रत्येक सही उत्तर के लिए **01** अंक और गलत उत्तर पर **0** अंक प्रदान किया गया है।

मानक : भाषाई/शाब्दिक बुद्धि के स्तर के आकलन के लिए मानक का निर्धारण इस प्रकार किया गया है। जिसको तालिका संख्या के माध्यम से दर्शाया गया है

अंक विस्तार	शाब्दिक बुद्धि का स्तर
34 से अधिक	अतिउच्च शाब्दिक बुद्धि
27 – 34	उच्च शाब्दिक बुद्धि
20 – 26	सामान्य शाब्दिक बुद्धि
13 – 19	निम्न शाब्दिक बुद्धि
12 से कम	अति निम्न शाब्दिक बुद्धि

सांख्यिकीय विधियां : प्रदत्त से बांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन और टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

उद्देश्यः 1 प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर का अध्ययनः–

इस उपवर्ग में बी.एड. पाठ्यक्रम में अध्ययनरत प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर का अध्ययन किया गया है जिसका विवरण निम्नवत है।

तालिका 1

प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर का विवरण।

शाब्दिक बुद्धि का स्तर	**प्रशिक्षु शिक्षकों की संख्या**	**प्रतिशत**
अति उच्च शाब्दिक बुद्धि	07	4.67%
उच्च शाब्दिक बुद्धि	42	28%
सामान्य शाब्दिक बुद्धि	36	24%
निम्न शाब्दिक बुद्धि	38	25.33%
अति निम्न शाब्दिक बुद्धि	27	18%

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

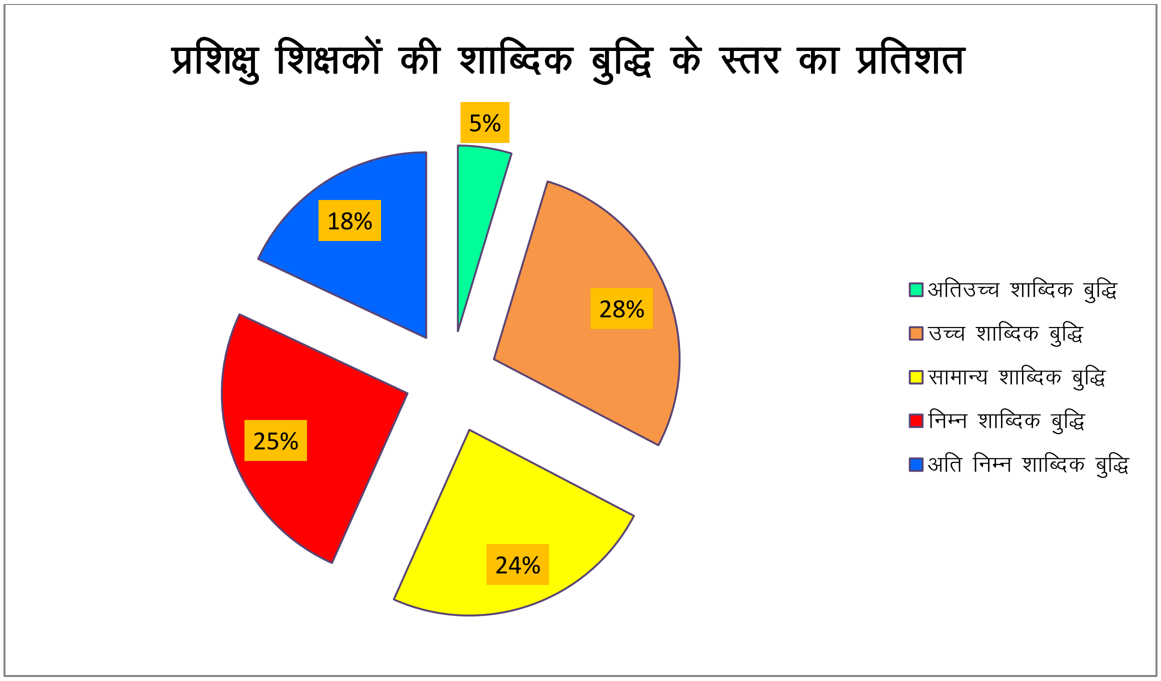

तालिका–01 प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर को दर्शाती है। तालिका के अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि केवल 4.67% (07) प्रशिक्षु शिक्षकों ही शाब्दिक बुद्धि अति उच्च स्तर की पायी गयी हैं और उच्च शाब्दिक बुद्धि 28% (42) प्रशिक्षु शिक्षकों की पायी गयी । 24% (36) प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि का स्तर सामान्य पाया गया जबकि 25.33% (38) प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि का स्तर निम्न पाया गया। 18% अति निम्न शाब्दिक बुद्धि स्तर के प्रशिक्षु शिक्षक पाये गये। शिवकुमार और अरुणाचलम (2012) के अध्ययन में इसी प्रकार के निष्कर्ष प्राप्त हुए थे। इसका प्रमुख संभावित कारण यह हो सकता है कि उत्तर प्रदेश में प्रवेश परीक्षा में कोई न्यूनतम कट ऑफ निर्धारित नहीं किया गया है इसमें प्रवेश परीक्षा में सम्मिलित होना ही अनिवार्य शर्त है।

उद्देश्यः 2 प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर का लिंगभेद के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन–

इस उपवर्ग में प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर का लिंगभेद के परिप्रेक्ष्य में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है जिसका विवरण निम्नवत है।

तालिका–02

पुरुष और महिला प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि स्तर का तुलनात्मक विवरण (N=150)

प्रशिक्षु शिक्षक	मध्यमान	मानक विचलन	टी अनुपात	परिणाम

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved, UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, Iss 13, 2022

पुरूष	24.94	6.04	3.25*	सार्थक
महिला	21.76	5.55		

* 0.01के सार्थकता के स्तर पर सार्थक

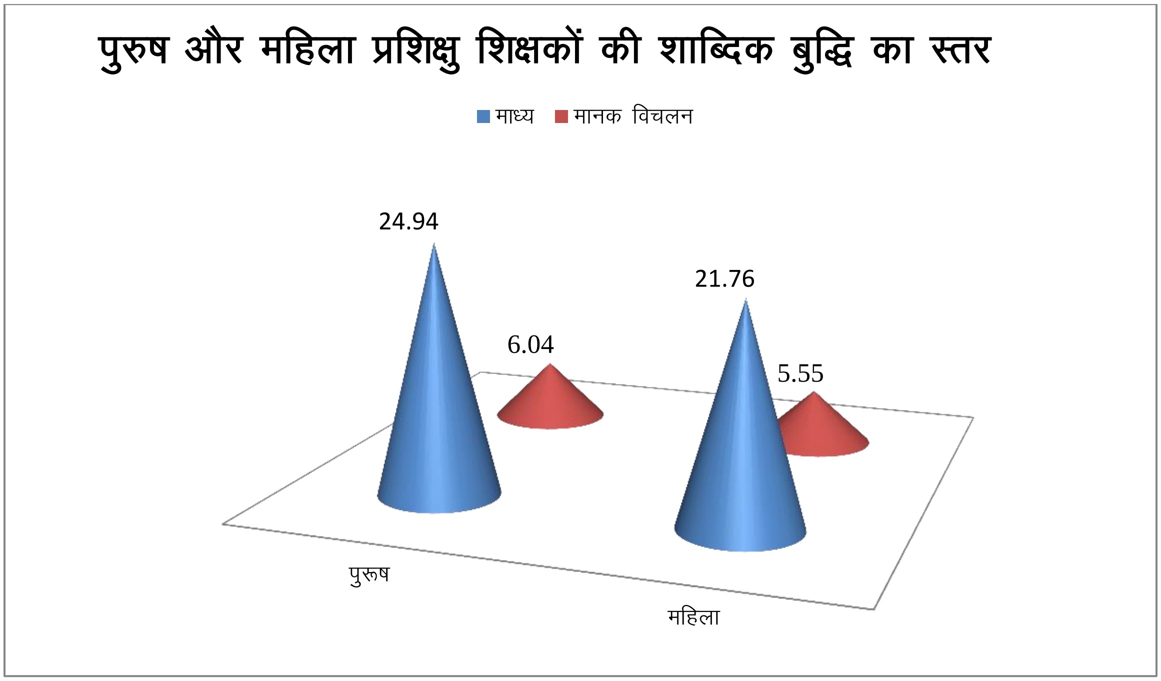

तालिका–02 के देखने से विदित होता है कि पुरूष व महिला प्रशिक्षु शिक्षकों का शाब्दिक बुद्धि परीक्षण पर प्राप्त अंको का टी–मान 3.25 है जो कि 0.01के सार्थकता स्तर के सारणी मान से अधिक है अर्थात टी –मान सार्थक है इसलिए शून्य परिकल्पना पुरुष और महिला प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है, को अस्वीकृत किया जाता है। जबकि महिला प्रशिक्षु शिक्षकों के अंको का मध्यमान 21.76 पुरूष प्रशिक्षु शिक्षकों के मध्यमान 24.94 से कम प्राप्त हुआ, जो स्पष्ट करता है कि पुरूष प्रशिक्षु शिक्षकों का शब्दिक वुद्धि स्तर महिला प्रशिक्षु शिक्षकों से वेहतर है। तालिका 02 से स्पष्ट है कि पुरुष प्रशिक्षु शिक्षकों का मानक विचलन 6.04 महिला प्रशिक्षु शिक्षकों के मानक विचलन 5.55 से अधिक है इससे यह पता चलता है कि पुरूष प्रशिक्षु शिक्षकों के शाब्दिक बुद्धि परीक्षण पर प्राप्त अंको में असमानता महिला प्रशिक्षु शिक्षकों से अधिक है। अल–फ़ौरी और समादि (Al-faury&Smadi,2015), टी.साई (T-sai, 2016) के अध्ययन में लिंगभेद के आधार पर सार्थक अंतर पाया गया जबकि शिवकुमार और

अरुणाचलम (Sivkumar & Arunachalam,2016) के अध्ययन में विपरीत परिणाम प्राप्त हुए थे, जिसमें लिंगभेद का बहुबुद्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। इसका संभावित कारण यह हो सकता है कि महिलाओं के लिए शिक्षण पेशा सर्वोत्तम है। इसीलिए अधिकतर निजी प्रशिक्षण संस्थानों में महिला प्रशिक्षु शिक्षकों की संख्या अधिक पाई जाती है ।

उद्देश्य –3 प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर का संस्थान प्रबंधन के संदर्भ में तुलना–

इस उपवर्ग में सरकारी एवं गैर सरकारी महाविद्यालयों में अध्ययनरत प्रशिक्षु शिक्षकों शाब्दिक बुद्धि के स्तर तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिसका विवरण निम्नवत है।

तालिका– 03

सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि का स्तर, (N= 150)

संस्थान का प्रकार	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**टी अनुपात**	**परिणाम**
स्रकारी	27.62	4.97	8.4*	सार्थक
गैर सरकारी	20.52	4.83		

* 0.01के सार्थकता के स्तर पर सार्थक

तालिका– 03 के निरीक्षण से विदित होता है कि सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षु शिक्षकों का बुद्धि परीक्षण पर प्राप्त अंको का टी–मान 8.4 है जो कि 0.01के सार्थकता स्तर के सारणी मान से अधिक है अर्थात टी –मान सार्थक है इसलिए शून्य परिकल्पना सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं, को अस्वीकृत किया जाता है। सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों में प्रशिक्षणरत् प्रशिक्षु शिक्षकों का मध्यमान क्रमशः 27.62 और 20.52 है जिस से स्पषट है कि सरकारी संस्थानों से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षु शिक्षकों का शाब्दिक बुद्धि का स्तर गैरसरकारी संस्थानों से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षु शिक्षकों से वेहतर है। प्रियंका और छिकरा (Priyanka & Chhikara, 2021) के अध्ययन में समतुल्य निष्कर्ष प्राप्त हुए।सरकारी संस्थानों से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि के स्तर गैर सरकारी संस्थानों की तुलना में उच्च पायी गयी इसका का संभावित कारण यह हो सकता है कि बी.एड. प्रवेश परीक्षा में उच्च रैंक हासिल करने वाले परीक्षार्थियों को ही सरकारी संस्थानों में प्रवेश मिलता है।

निष्कर्षः प्रस्तुत शोध अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

प्रशिक्षु शिक्षकों में 43.33% प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि का स्तर सामान्य से कम पाया गया और 24%प्रशिक्षु शिक्षकों की बुद्धि का स्तर सामान्य की पाई गई। पुरुष प्रशिक्षु शिक्षकों की तुलना में महिला प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि सार्थक रूप से कम पाई गई। जो विंसी एवम पुगालेंथि (Vincey & Pugalenthi,2016) के समान परिणाम प्राप्त हुए। गैर सरकारी संस्थानों से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षु शिक्षकों की शाब्दिक बुद्धि का स्तर सरकारी संस्थानों से प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले प्रशिक्षु शिक्षकों की तुलना में निम्न स्तर का पाया गया।

शैक्षिक निहतार्थ: शैक्षिक स्तर के उन्नयन हेतु बी.एड. प्रवेश परीक्षा में न्यूनतम कट ऑफ निर्धारित किया जाना चाहिए जिससे केवल उच्च शाब्दिक बुद्धि स्तर वाले व्यक्ति ही बी. एड. प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे और शिक्षा का स्तर ऊपर उठ सकता है। शिक्षकों के शैक्षिक स्तर के उन्ननयन में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भाषा अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम होती है। भाषा ही संचार का सर्वोत्तम माध्यम होती है। भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में शिक्षा के केंद्र में छात्रों के साथ – साथ शिक्षकों को भी रखा गया हैं, जिसमें शिक्षकों के सेवापूर्व और सेवारत प्रशिक्षण पर बहुत जोर दिया गया है। इस आलोक के सन्दर्भ में केंद्र सरकार ने सेवापूर्व शिक्षकों के लिए चार वर्षीय एकीकृत बी.एड. पाठ्यक्रम और सेवारत प्रशिक्षण के लिए केंद्र और राज्य सरकार ने भाषा और गणित के ऑफ़ लाइन और ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये हैं। ऑनलाइन प्रशिक्षण के लिए दीक्षा एप लागू किया है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों के लिए मिशन प्रेरणा और निपुण भारत एप लागू किये गये हैं जिनके द्वारा छात्रों की भाषा और गणित में निपुण बनाने के लक्ष्य निर्धारित किये गए हैं। जिनका एकमात्र उद्देश्य वर्ष 2025–26 तक भारत के कक्षा 1 से 3 तक के प्रत्येक विद्यार्थी को भाषा और गणित में निपुण बनाना, निर्धारित किया गया है। जिसमें शिक्षकों की शाब्दिक या भाषाई बुद्धि महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। अतः भाषाई बुद्धि प्रक्षिशु शिक्षकों के साथ – साथ नीति नियन्ताओं, प्रशासकों, विद्यालय के प्रबंधको, प्रधानाचार्यो एवं विद्यार्थियों के लिए भी उपयोगी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. Armstrong, T. (1999). Seven Kinds of Smart: Identifying and Developing Your Multiple Intelligences paperback. New York city Plume publication ISBN-13. 978-0452281370. https://www.google.com/search?q=1.%09Armstrong%2C+T.+%281999%29.+Seven+Kinds+of+Smart%3A+Identifying+and+Developing+Your+Multiple+Intelligences+
2. Armstrong, T. (2009).Multiple intelligences in the classrooms. (4th Ed.). Alexandria, VA, USA: ASCD. Retrieved from https://files.ascd.org/staticfiles/ascd/pdf/siteASCD/publications/books/Multiple-Intelligences-in-the-Classroom-4th-Edition-Sample-Chapters.pdf on 21/01/22.

3. Ahmadian, M., & Hosseini, S. (2012). The relationship between Iranian English learners' linguistic intelligence and their writing ability, and writing assessment criteria. *Journal of Language, Culture and Translation*, *1*(2), 1-22. Online retrieved https://lct.shahreza.iau.ir/article_551887_8b04194315a24f75460cef3448a8d75a.pdf on the date 07.01.2021.
4. Al-Faoury, O.H. & Smadi. O.M. (2015). The effect of an integrative skills program on developing Jordanian university students' select multiple intelligences. *Theory and Practice in Language Studies*, 5(1), 38-48.online available on http://dx.doi.org/10.17507/tpls.0501.05 retrieved on the date 02.03.2022.
5. Best, J. W. & Kahn, J. V. (2006).*Research in Education*, New Delhi: Prentice Hall of India.
6. Erlina,D. & others (2019). Linguistic Intelligence of Undergraduate EFL Learners in Higher Education: A Case Study. *Universal Journal of Educational Research* 7(10): 2143-2155, online available on http://www.hrpub.org
   DOI: 10.13189/ujer.2019.071012 online retrieved on the date 04.03.2022.
7. Gardner, H. (1983). Frames of mind: The theory of multiple intelligences (1^{st} Ed.). New York: Basic Books.
8. Gardner, H. (2011). *Frames of mind: the theory of multiple intelligences* (10^{th} Ed). New York, NY: Basic Books.
9. Hasanudin, C., & Fitrianingsih, A. (2020). Verbal linguistic intelligence of the first-year students of Indonesian education program: a case in reading subject. *European Journal of Educational Research*, *9*(1): 117-128.Online available and retrieved the website https://doi.org/10.12973/eu-jer.9.1.117 on the date 04.03. 2022.
10. Hali, N. I. (2017). The actualization of literary learning model based on verbal-linguistic intelligence. *International Journal of Education & Literacy Studies, 5*(4): 42-48,online retrieved from file:///C:/Users/dell/Downloads/The_Actualization_of_Literary_Learning_Model_Based.pdf on the date 04.03.2022.
11. Halil, N. I. (2017). The actualization literature based learning verbal-linguistic intelligence. *Leksika, 11*(1): 40-46. Online retrieved from the website https://www.researchgate.net>publication>321478824 on the date 08.03.2022.
12. Mariani, N. (2016). Developing students' intelligent character through linguistic politeness: The case of English as a foreign language for Indonesian students, *Canadian Center of Science and Education.* 9(1): 101-106. Retrieved from the website https://files.eric.ed.gov on the date 04.12.2020.
13. Priyanka & Chhikara,S.(2021). Assessment of multiple intelligence among school going boys: A comparative study. *The Pharma Innovation Journal*. 10(8), 1028-1032, online available on www.thepharmajournal.com. retrieved on 04.03.2022.
14. Sivakumar, D. & Arunachalam, N. (2012). Relational studies on multiple intelligence and achievement in science among high school students. *Scholarly Research Journal for Interdisciplinary studies*, 1(3):497-508. Retrieved from the website www.srjis.com on date 05.02.2022.

15. Tsai, M. Y. (2016). Research on multiple intelligences of junior high school students with different background variables. *Journal of Modern Education, 6*(1), 10-18. https://doi.org/10.15341/jmer(2155-7993)/01.06.2016/002, online available and retrieved from the website SSRN: https://ssrn.com/abstract=2844088 on 012.03.2022.
16. Vincey, D. & Pugalenthi, N. (2016). A study of linguistic intelligence and academic achievement of the student at standard XIth level. *Shanlex International Journal of Education,* 4(4), 25-38, online available and retrieved from website https://www.shanlexjournal.in on the date 03.04.2022.